समकालीन हिंदी कथा साहित्य में नारी

- डॉ. लूनेश कुमार वर्मा

शोध सार

भारत में आदिकाल से नारियों को उच्च स्थान प्राप्त रहा है किंतु पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण समाज में सदियों से पुरुषों का वर्चस्व रहा है। ऐसी स्थिति में स्त्रियों को उनके वास्तविक अधिकारों से वंचित रख उनका उत्पीड़न, दमन और शोषण होता रहा है। परिवार में वह निर्णायक स्थिति में नहीं रही है। उसे पुरुष के संरक्षण की अधिकारिणी माना जाता रहा है। स्वतंत्रता पश्चात स्थिति बदली है। शिक्षा प्रसार, जागरूकता आदि के फलस्वरुप वह अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई है। वह परंपरागत मान्यताओं और रुढ़ियों को तोड़ आगे बढ़ रही है। आधुनिक काल की नारी पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलकर चलते हुए विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के परचम लहरा रही हैं। वह उन्मुक्त जीवन जीते हुए नारी मुक्ति की अवधारणा को जीवंत करते हुए अपने निर्णय स्वयं ले रही हैं। अब उनमें नारीत्व की अपेक्षा मनुष्यत्व की भावना प्रबल हो रही है। वह अपनी स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकारती है। अपनी इच्छानुसार जीवन जीने लगी है। समकालीन हिंदी कथा लेखिकाओं ने नारी की ऐसी छवि को साहित्य में उकेरा है।

मुख्य शब्द- समाज, नारी, स्वतंत्रता, उन्मुक्त जीवन, समकालीन हिंदी कथा, स्वतंत्र अस्तित्व।

भारत में आदिकाल से नारियों को उच्च स्थान प्राप्त रहा है। यहाँ नारी को 'नारी नारायणी भवति' कहकर देवता के तुल्य माना गया है। वहीं मध्यकाल में नारियों के स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई थी। पुनर्जागरण काल में विभिन्न आंदोलन के फलस्वरुप उनकी स्थिति में परिवर्तन आया। स्वतंत्रता पश्चात भारतीय संविधान द्वारा स्त्री और पुरुष को समान अधिकार दिया गया। अब वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने लगी। लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय भारतीय नारियों की इन्हीं स्थितियों के संदर्भ में कहते हैं- "सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक पुनर्जागरण के इस काल में नारियों कहीं भी कोने में पड़ी रहने वाली मैले कपड़ों की गठरी नहीं सिद्ध हुई और प्रत्येक क्षेत्र में इनका स्पष्ट योगदान सामने आया। इससे मानव-मूल्यों को नई अर्थवत्ता प्राप्त हुई और दोनों वर्गों (स्त्री-पुरुष) के बीच समानता की भावना सर्वथा नए परिवेश में उपस्थित हुई।"[1] स्वतंत्रता पश्चात नारी दासता के बंधन से मुक्त हो, नए परिवेश में नए विचारों के साथ, नए तरीके से उन्मुक्त जीवन जीने की राह में अग्रसर हो गई है। नवीन सोच, शिक्षा के प्रसार, संविधान प्रदत्त अधिकार, औद्योगीकरण, नगरीकरण आदि के कारण रोजगार के नवीन अवसर, आर्थिक निर्भरता, संयुक्त परिवार विघटन आदि के कारण सामाजिक संरचना में परिवर्तन हुआ है।

पश्चिमी देशों की अंधानुकरण की प्रवृत्ति, सिनेमा, टेलीविजन, मोबाइल आदि के कारण समाज में लोगों के आचार-विचार-व्यवहार में परिवर्तन आया है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। जब समाज में इतने सारे परिवर्तन हुए, तब भला साहित्य इन सबके चित्रण से अछूता भला कैसे रहता? आधुनिक काल की पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलकर चलते हुए विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के परचम लहरा रही हैं। वहीं उन्मुक्त जीवन जीते हुए नारी मुक्ति की अवधारणा को जीवंत

करते हुए अपने फैसले स्वयं ले रही हैं। अब उनमें नारीत्व की अपेक्षा मनुष्यत्व की भावना प्रबल हो रही है।

समकालीन समाज में नारी की बदलती हुई भूमिका का चित्रण चित्रा मुद्गल, प्रभा खेतान, मन्नू भंडारी, नासिरा शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, उषा प्रियंवदा, शुभा वर्मा महिला जैसी लेखिकाओं ने कुशलतापूर्वक किया है। इन लेखिकाओं ने नारी जीवन के विविध पहलुओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। आधुनिक काल की नारी पितृसत्तात्मक व्यवस्था में जकड़ कर नहीं रहना चाहती। वह अपनी स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकारती है। अपनी इच्छानुसार जीवन जीने लगी है। स्वतंत्रता के पश्चात् सत्तर के दशक से उनकी स्थिति में व्यापक परिवर्तन आया है। ...और यहीं से नारी विमर्श की अवधारणा बलवती हुई है। नारी पुरुष पर आश्रित न रहकर अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की निर्माण करती हुई अपने संघर्ष को दिशा देने लगी। अब वह वस्तु से व्यक्ति बनने की दिशा में अग्रसर होती हुई विस्तृत फलक पर अपनी नई पहचान स्थापित करने लगी। समकालीन हिंदी कथा लेखिकाओं ने नारी की ऐसी छवि को साहित्य में उकेरा है।

हिंदी कथा लेखिकाओं ने नारी जीवन से जुड़ी हुई विभिन्न पहलुओं जैसे समाज में समानता का अधिकार संपत्ति का अधिकार नारीत्व से मुक्ति, देह से मुक्ति मातृत्व, उत्तराधिकार, विवाह, विवाहेत्तर संबंध, यौन शुचिता आदि मुद्दों को प्रमुखता से अभिव्यक्त किया है। आधुनिक नारी में किसी पुरुष विशेष के साथ बंध कर रहना पसंद नहीं करती है। उसे जब जिस पुरुष का साथ मिलता है, वह उसके साथ ही सुख वह आनंद की अनुभूति करती है। जब नारी अपनी प्रेमी के साथ होती है और वह उसका स्पर्श सुख प्राप्त करती है, तो उसे वह क्षण ही सत्य लगता है। मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' कि दीपा जब अपने पुराने प्रेमी के साथ होती है और वह उसका स्पर्श प्राप्त करती है, तब वह अनुभव करती है- "मुझे लगता है यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, बाकी सब झूठ है। अपने को भूलने का, भरमाने का, छलने का असफल प्रयास है।"[2] समकालीन कथा साहित्य में नारी जीवन से संबंधित ऐसे विषय जिन पर अब तक चर्चा नहीं की गई थी, को प्रखरता से उठाया गया है।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था के रीति-रिवाज और परंपराओं से पीड़ित व्यवस्था में शोषण से मुक्ति के लिए नारी अब किसी की आश्रित रहने की मानसिकता को स्वीकार नहीं करती है। अब वह समाज में अपनी स्थिति स्वयं निर्धारित करने लगी है। वह अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित कर रही है। इन सब के कारण नारी विमर्श की अवधारणा समकालीन हिंदी साहित्य में बलवती हुई है। हिंदी लेखिकाओं ने अपनी कथाओं के विभिन्न नारी पात्रों के माध्यम से आदर्शवादी यथार्थवादी प्रगतिशील प्रतिगामी नारी चरित्र के विविध पहलुओं को प्रकट किया है। इन कथाओं में वर्णित नारी चरित्र पितृसत्तात्मक व्यवस्था के द्वारा सदियों से चले आ रहे मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह उपस्थित कर रही हैं।

भारतीय परंपरा में विवाह को संस्कार माना जाता था। इसके माध्यम से स्त्री-पुरुष गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर संतान उत्पत्ति करते हुए परिवार का पालन पोषण में संलग्न हो धर्म-कर्म में प्रवृत्त होते थे। आधुनिक काल में व्यक्ति भौतिकवादी हो गया है। सामाजिक व नैतिक मूल्यों का हनन हो रहा है। समाज में संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार की प्रवृत्ति बढ़ रही है। बंधन की अपेक्षा मुक्ति, निर्णय की स्वतंत्रता और निजी अनुभव की प्रधानता के कारण विवाह व परिवार जैसी संस्थाओं के स्वरूप में परिवर्तन आ रहा है। "विवाह की सीमा के बाहर यौन तृप्ति या विवाह से

पूर्व यौन संबंध अब पहले की भांति चौंकाते नहीं है। फलत: स्वैच्छाचारिता, पर स्त्री गमन, उन्मुख प्रेम तथा प्रयोगात्मक विवाह जैसी अनेक संकल्पनाएँ जन्म ले रही हैं। इन अभिवृत्तियों के मूल में आज की परिवर्तनशील और यौन संबंधों का तथा विवाह के संदर्भ में बदलते जीवन को लक्षित किया जा सकता है। संभवत: यह बदलते जीवन मूल्य आज सर्वाधिक महत्व रखते हैं।"[3] अब विवाह से पूर्व नर-नारी यौन संबंध स्थापित करने लगे हैं। विवाह पश्चात भी विवाहेतर संबंधों से परहेज नहीं कर रहे हैं। अब स्वैच्छाचारिता, पर स्त्री-पुरुष गमन, उन्मुख प्रेम, समलैंगिक संबंध आदि पर लोग आश्चर्य व्यक्त नहीं करते हैं। इन सब के प्रति नारी का अपना दृष्टिकोण है।

नारी विमर्श का सीधा संबंध नारी के निर्णय की स्वतंत्रता और निजी अनुभव की प्रमाणिकता से है। नारी विमर्श मानता है कि नारी का शरीर उनका अपना है, इसलिए पत्नीत्व व मातृत्व का निर्णय स्वैच्छिक स्वीकार करता है। यौन संबंध में स्त्री और पुरुष दोनों की भागीदारी होती है। इसलिए दोनों के लिए एक जैसी स्थितियाँ होनी चाहिए। पुरुष मनचाही गतिविधियाँ करें और स्त्रियाँ सीमा में रहे, यह कहाँ तक उचित है? नैतिकता की सीमा दोनों के लिए समान होना चाहिए।

पुरुष प्रधान समाज में बचपन से ही लड़कियों के लिए तरह-तरह के बंधन लगा दिए जाते हैं। इस कारण करीबी संबंधियों के द्वारा उनका शोषण या बलात्कार जैसी घटनाएँ सामने आती हैं। इन सब पर भी लड़कियों को मुँह बंद रखने, चुप रहने की सलाह दी जाती है। फलत: वे शोषण के विरुद्ध आवाज नहीं उठा पाती हैं। कभी-कभी दुराचार करने वाला धनाट्य, संपन्न या प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। ऐसे में संबंधों के बिगड़ जाने के भय से उसके विरुद्ध आवाज उठाना समाज में अच्छा नहीं माना जाता है। चित्रा मुद्गल के 'आवां' उपन्यास में दस वर्षीय नमिता का यौन शोषण उसके मौसा के द्वारा किया जाता है। इस आकस्मिक घटना को नामित अपने माँ से कहती है। माँ अपनी पुत्री नमिता के साथ हुए सम्पूर्ण घटनाक्रम को जानकर भी संबंध खराब होने के भय से उसे चुप रहने के लिए कहती है। उसे समझाते हुए वह कहती है- "जो हुआ सो पेट में डाल, वरना मामूली सी बात से जीवन भर का बैर हो उठेगा।"[4] माँ के इस कथन से नमिता के मन में अन्याय, अत्याचार, दुराचार का विरोध करने की इच्छा का पतन हो जाता है। बाद में जब अन्ना साहब उसके साथ गलत करते हैं, तब वह विरोध नहीं कर पाती है। यदि पहले ही कठोर लेते हुए तत्क्षण उसका विरोध कर दिया जाता, तो संभवत नमिता के साथ आगे इस तरह की घटना नहीं घटती।

आज बहुत सी नारियाँ विवाह पर विश्वास नहीं रखती हैं। वे विवाह को बंधन मानती हैं। उनके अनुसार विवाह का तात्पर्य पुरुषों की बनी बनाई दुनिया को उनके अनुसार स्वीकार करना। इसलिए बिना विवाह किए पुरुष के साथ रहकर वह सब कुछ करती है, जो विवाह पश्चात पति-पत्नी के बीच होता है। इस तरह उनके बीच प्रगाढ़ संबंध होने पर भी वह उसे विवाह में परिवर्तित नहीं होने देती है। 'पीली आंधी' उपन्यास में प्रभा खेतान आधुनिक नारियों की इसी को अवधारणा को अभिव्यक्त करती है- "शादी का अर्थ ही था पुरुष की बनायी दुनिया स्वीकार करना, उस दुनिया के शर्तों के अनुसार जीना।"[5] आधुनिक नारियाँ अपने को स्वतंत्र मान रही हैं, तब भला विवाह जैसे बंधन को स्वीकार कर फिर क्यों पुरुषों की दासता को स्वीकार करेगी। आधुनिक नारी पढ़ी-लिखी है। वह अपना अच्छा-बुरा जानती है। वह अपना भविष्य सुरक्षित करना चाहती है। इसलिए घर गृहस्थी के फेर में वह पढ़ना नहीं चाहती है। वह अपने दुनिया स्वयं बसाना जानती है।

आधुनिक नारी के लिए पति किसी वस्तु की तरह ही है। घर में विभिन्न वस्तुओं का अपना स्थान है, उसकी अपनी उपयोगिता है। घर में रखी विभिन्न वस्तुओं का उपयोग हम अपने लिए करते हैं। वस्तुओं से हमारा लगाव क्षणिक होता है। उस वस्तु के अभाव में बाहर से उस वस्तु की आपूर्ति कर ली जाती है, उसी तरह पति-पुरुष की भी। आधुनिक नारी की दृष्टि में पति की वही स्थिति है, जो घर में रखी किसी वस्तु का। चित्रा मुदगल के 'आवां' उपन्यास की नारी पात्र है गौतमी। उसका का कथन है- "माँ के अलावा घर में मेरा एक पति है, नाम है अशोक। ठीक उसी तरह घर में अलमारी है, फ्रिज है, वाशिंग मशीन है, डिशवॉशर है, जितना वह मेरे लिए काम आती है, बदले में मैं उनकी देखभाल करती हूँ। अशोक के साथ भी मेरा यही रिश्ता है। शेष क्या कहूँ, कहाँ जाती हूँ, इसके साथ सोती हूँ, सोना चाहती हूँ, सोती भी हूँ या नहीं सोती हूँ, कोई मतलब नहीं उससे। घर मेरा है। अशोक को रहना है- रहे, न रहना हो, छोड़कर चला जाए।"[6] गौतमी आधुनिक युग की नारी है। उसकी दृष्टि में पति की वही स्थिति है, जो उसके घर में रखें किसी वस्तु की। पति के होते हुए भी वह अपनी शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति किसी भी पुरुष से करने के लिए वह अपने को स्वतंत्र मानती है। ऐसा करने से उसे रोकने का अधिकार उसके पति को है, ऐसा वह नहीं मानती है। यदि उसकी गतिविधियाँ उसके पति को ठीक नहीं लगती है, तो वह कहीं भी जाने के लिए स्वतंत्र है।

आज की नारियों की पहली प्राथमिकता रोजगार है, परिवार बाद में। अपने पैरों पर खड़ा होने के पश्चात विवाह करने या नहीं करने का अपना निर्णय लेने लगी है। उनके इस निर्णय पर घर-परिवार का कोई भी सदस्य अब कुछ बोल नहीं सकता है। यदि कोई उसके विवाह की बात करता भी है तो वह इसका पुरजोर विरोध करती है। प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की पात्र नीता के पिता जब उसके विवाह की बात करते हैं, तब वह इसका विरोध करती है। वह कहती है- "देखा भाभी पापा चाहते हैं कि मेरी शादी हो जाए, लेकिन मैं नहीं करुँगी। मैं पहले अपने पैरों पर खड़ी होऊँगी।"[7] पढ़ी-लिखी नारी पहले अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है, उसके पश्चात मातृत्व वह अपनी शर्तों पर स्वीकार करना चाहती है।

आधुनिक नारी पुरुषों पर आश्रित नहीं रहना चाहती है। एक तो वह विवाह नहीं करना चाहती है, दूसरा यदि करती भी है तो पति को परमेश्वर की तरह मानने के लिए वह तैयार नहीं। आज की नारी किसी पुरुष से बंधकर अपना जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक नहीं अनेक पुरुषों के साथ भी संसर्ग करने के लिए तत्पर रहती है। वह अपना जीवन अपने अनुसार जीने के लिए स्वतंत्र रहना पसंद करती है। नासिरा शर्मा के 'सात नदिया एक समुंदर' उपन्यास की पात्र तप्यवा का कहना है- "मेरी जिंदगी का निशाना मर्द नहीं है, बल्कि मर्द एक जरूरत है। एक भोजन, जो हमारी शारीरिक भूख का इलाज है।"[8] आधुनिक नारी मानती है कि जिस तरह भूख लगने पर भोजन किया जाता है, उसी तरह शारीरिक भूख मिटाने के लिए किसी भी पुरुष का संसर्ग किया जा सकता है। इसके लिए पति ही हो, यह आवश्यक नहीं।

आधुनिक नारी काफी अधिक परिपक्व हो गई है। विवाह-परिवार के विषय में वह सजग है। इस पर वह स्वयं निर्णय लेने लगी है। उसे अपने विवाह की चिंता नहीं है। चित्रा मुदगल के 'आवां' उपन्यास की नमिता अपने विवाह के विषय में निश्चिंत है। उसका कथन है- "ब्याह का क्या

है, हो जाएगा। नहीं हुआ, तो मुझे नहीं लगता कि बिना ब्याह के मेरी सारी दुनिया उखड़ जाएगी।"[9] आधुनिक नारी बिना विवाह के भी अपना जीवन व्यतीत करने के लिए तत्पर है।

नारी विमर्श नारी के अस्तित्व को नकारने वाली व्यवस्था व विचारधारा का पुरजोर विरोध करती है। नारी वस्तु नहीं व्यक्ति है। उनका अपना अस्तित्व है। वह भोग्या नहीं है। वह स्वतंत्र है। उसे अपने अनुसार जीवन जीने का पूरा अधिकार है। वह मानवी है। उसे समाज में इसी रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। वह पुरुषों के द्वारा अधिशासित सत्ता का विरोध करने में समर्थ है। अब वह सजग हो गई है। पुरुष समाज उसे उपभोग की वस्तु के रूप में बांधकर नहीं रख सकता है। चित्रा मुद्गल पुरुष प्रधान समाज के उपभोक्तावादी विचारधारा का प्रतिकार करती हुई 'एक जमीन अपनी' उपन्यास में कहती है- "सुधांशु जी! औरत बोनसाई का पौधा नहीं है। ...जब जी चाहे उसकी जड़ें काटकर उसे वापस गमले में रोप लिया। ...वह बौना बनाए रखने की साजिश को स्वीकार भी तो कर सकती है।"[10] आधुनिक नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गई है। अपने साथ होने वाले अन्याय अत्याचार को भली-भांति जानने-समझने लगी है, साथ ही वह उसका प्रतिकार भी कर सकती है।

समकालीन कथा लेखिकाओं ने नारी के विवाहेतर यौन संबंधों पर खुलकर लिखा है। लेखिकाएँ स्वयं नारी हैं। वे नारी मन की भावनाओं को भी भली-भांति जानती हैं। उनके द्वारा नारी के विषय में लिखा गया वृतांत यथार्थ है। आधुनिक नारी विचारशील हैं। वह जानती है- उनका शरीर, उनका अपना है। इसका अपनी इच्छा अनुसार जब चाहे, जहाँ चाहे, जैसा चाहे प्रयोग करने के लिए वे स्वतंत्र हैं। इसी स्वतंत्रता की परिणति में वे विवाह से पूर्व व पश्चात यौन संबंधों के लिए वे किसी बंधन को नहीं मानती हैं। उनकी दृष्टि में नैतिकता की परिभाषाएँ अलग हैं। वे सामाजिक नियमों के बंधनों को स्वीकार नहीं करती हैं।

यौन मुक्ति को वह अपनी आज की आवश्यकता मानती है। चरित्र और यौन व्यवहार को वे अलग-अलग मानती हैं। यौन संतृप्ति के लिए विवाह करना या विवाह पश्चात पति तक सीमित रहना, वे उचित नहीं मानती हैं। वे सोच-समझकर विवाहेतर संबंध स्थापित करती है। ऐसा करने में उन्हें कहीं भी पाप या ग्लानि का अनुभव नहीं होता है। मैत्री पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में सारंग अपने पति व बच्चों के होते हुए पर पुरुष से संबंध स्थापित करती है। संबंध स्थापित करने के पश्चात कहती है- "मुझे तो पाप नहीं लगा, अपना किया। कतई नहीं हुआ पाप बोध, जो किया सोच समझ कर किया। मैं न अबोध थी, न विधवा-रांड और न कुंवारी, अल्हड़ जवानी की मारी।"[11] दूसरे पुरुष के साथ यौन संबंध स्थापित करते हुए सारंग को पाप का अनुभव नहीं होता है, उसे कहीं पछतावा नहीं होता है। उसने जो कुछ किया सोच-समझ कर किया।

अब समय बदल गया है। समय के साथ लोगों की सोच बदल गई है। नारियाँ अब पर पुरुष के साथ यौन संबंधों को खुलकर स्वीकार कर रही हैं। वे इसे किसी भी तरह से गलत नहीं मानती हैं। स्त्री और पुरुष का संबंध प्राकृतिक संबंध है। वे तर्क उपस्थित करने लगी हैं कि क्या संसार में जितने भी स्त्री-पुरुष हैं और उनमें जो यौन संबंध बनता है, क्या वे पति-पत्नी ही हैं, क्या विवाहित पुरुष या विवाहित स्त्रियाँ किसी अन्य से संबंध स्थापित नहीं करती हैं? यदि नहीं तो उनके द्वारा किसी से यौन संबंध स्थापित करना क्या गलत है। इसलिए उसे ऐसा करते हुए कहीं भी ग्लानि या पछतावा का अनुभव नहीं होता है। प्रभा खेतान के उपन्यास 'पीली आंधी' की सोमा ऐसा ही विचार

रखने वाली है। वह यौन संबंध स्थापित करने के पश्चात खुलकर इसे स्वीकार करती है। वह कहती है- "आखिर गलत क्या है? ऐसा कौन सा अपराध में कर रही हूँ? क्या अभी इस वक्त भी दुनिया के सैकड़ों स्त्री-पुरुष एक दूसरे को प्यार नहीं कर रहे होंगे? क्या उनका शरीर साथ नहीं? और सभी क्या पति-पत्नी हैं? किसी पर पुरुष को यदि मैं अपनाना चाहती हूँ, तो अनोखा क्या है? क्या कभी विवाहित स्त्री ने अन्य विवाहित पुरुष से प्यार नहीं किया है? किया फिर, यह भय और ग्लानि क्यों?"[12] आधुनिक नारी निर्भीक है। वह खुलकर अपने विचारों को व्यक्त करती है। वह तर्क करती है। वह अपने अधिकारों के लिए लड़ना जानती है। वह अपने पारिवारिक दायित्वों को पूरा करते हुए भी अपने दैहिक सुख के लिए आवश्यक कदम उठाने से पीछे नहीं रहती है और ऐसा करते हुए वह अपराध बोध का शिकार नहीं होती है।

आधुनिक नारी परिपक्व हो गई है। वह पाप-पुण्य की अवधारणा से परे अपने सुख के लिए जीती है। ऐसा करते हुए वह पारिवारिक व सामाजिक बंधनों को नहीं मानती है। चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'एक जमीन अपनी' की नीता इसी तरह के यौन संबंधों को खुलकर स्वीकार करती है। वह बंधनों को नहीं मानती है। वह कहती है- "हम प्रेम करते हैं। हमारा प्रेम मात्र आवेग नहीं है। न क्षणिक उन्माद। यह परस्पर संवाद है। परिपक्व, परिपक्व मानसिक जुड़ाव। हम वर्जनाहीन होकर जीएँगे। ...बंधनहीन होकर बंधेंगे।"[13] आधुनिक नारी सोच-समझकर अपने मनोभावों को व्यक्त करती है। वे खुलकर अपने प्रेम संबंधों और यौन व्यवहारों को स्वीकार करती हैं।

आधुनिक काल की नारी समाज में स्थापित मान्यताओं के अनुसार ही यौन संबंध नहीं बनाती है, अपितु आवश्यकता अनुसार समलैंगिक संबंध स्थापित करने में पीछे नहीं रहती हैं। इनमें संलग्न महिलाओं को आनंद की प्राप्ति होती है। उषा प्रियंवदा के 'अंतर्वंशी' उपन्यास में ऐसे ही समलैंगिक यौन व्यवहारों का चित्रण किया गया है। उपन्यास के पात्र वाना और क्रिस्तीन के उन्मुक्त समलैंगिक यौन व्यवहारों का चित्रण इस प्रकार किया गया है- "क्रिस्तीन उस पर झुकी हुई है। ...वह झीनी सिल्क खान ड्रेसिंग गाउन पहन है। जो झुकने से पीछे गिर गया है और वाना क्रिस्तीन के अनावृत्त शरीर को देख सकती है। उसकी क्रिस्तीन के छोटे-छोटे एकदम गोल और उन्नत सफेदी लिए कुच पर एक बहुत छोटे क्षण के लिए टिकती है, क्रिस्तीन बाएँ हाथ से वाना की ब्लाउज के बटन खोल रही है, वह अधीर है और बाएँ हाथ से अपने गुलाबी कुच को स्वयं दुलार रही है।"[14] समलैंगिक संबंध का रास्ता उन्हें अधिक सुरक्षित लगता है, जिन स्त्रियों की भावनाएँ संतृप्त नहीं होती है, वे किसी महिला साथी के साथ ही यौन क्रीड़ाओं का आनंद लेने लगती हैं।

कुछ स्त्रियाँ ऐसी होती हैं, जो शिक्षित होती हैं, महानगरों में रहती हैं। कुछ स्त्रियों के पति कामकाजी होते हैं और वे अपनी पत्नियों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं। इन स्थितियों में महिलाओं को एकाकीपन का अनुभव होता है। ऐसी स्थिति में यदि कोई पुरुष उस महिला के मनोभावों को जानने समझने वाला मिल जाए, तो उसे वह अपना लगने लगता है। वह महिला सहज उस पुरुष की आकर्षित हो जाती हैं। शुभा वर्मा के उपन्यास 'सुभान तेरी कुदरत' की नर्मदा बड़े शहर में पढ़ी-लिखी शिक्षित महिला है। विवाह पश्चात उसका रहना दिल्ली में होता है। उसका पति व्यावसायी है। वह नर्मदा को पर्याप्त समय नहीं दे पाता है। इस अवस्था में नर्मदा की भेंट मानस नामक युवक से होता है। वह सहज ही उसकी ओर आकर्षित हो जाती है। मानस उसे पर्याप्त समय

देता है, व उसके मनोभावों को भली-भांति समझता है। नर्मदा मानस के विषय में कहती है- "उसने मुझे वक्त दिया, जो मेरे मियां के पास नहीं था। उसने मुझे फाइनर इमोशंस दिए, जो मेरा मियां मुझे नहीं दे पाया। उसने मुझे प्रश्रय दिया, जो अपने विवाहित जीवन में मुझे कभी नहीं मिल पाया। ...मैं उपेक्षा सहते-सहते तंग हो चुकी थी, मनु ने मुझे दुनिया की हर चीज, रिश्ते से ऊपर रखा।"[15] नर्मदा अपने वैवाहिक संबंधों का भी निर्वाह करती है, साथ ही मानस के साथ संबंध को भी वह अनुचित नहीं मानती है।

निष्कर्ष

आधुनिक काल की नारी बंधन में जकड़ कर रहना पसंद नहीं करती है। वह अपनी विभिन्न इच्छाओं की पूर्ति के लिए निर्णय लेने में अपने को स्वतंत्र रखना चाहती है। उसके लिए पाप-पुण्य की अवधारणा मायने नहीं रखती है। वह अपने सुखों के लिए विभिन्न तरह के संबंध को सहज अपनाती है, स्वीकार करती है और उचित ठहराती है। नारी अब दासता के बंधन में बंध कर नहीं रहना चाहती। वह मानवी है। वह संविधान प्रदत्त अपने अधिकारों के प्रति सजग है। जिस तरह पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष निर्णय लेने में स्वतंत्र होते हैं, उसी तरह से आधुनिक काल की नारियाँ अपने निर्णय लेने में स्वयं को स्वतंत्र व समर्थ मानती हैं। वे स्वतंत्र व्यक्तित्व व अस्मिता की पहचान स्थापित कर जीवंत मानवी भूमिका की ओर अग्रसर है।

संदर्भ-

1. वार्ष्णेय, लक्ष्मी सागर. हिंदी उपन्यास : उपलब्धियाँ. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 1992, पृष्ठ 125.
2. भंडारी, मन्नू. यही सच है. नई दिल्ली : राधा कृष्ण प्रकाशन, संस्करण : 2011, पृष्ठ 89.
3. लक्ष्मी राय. आधुनिक हिंदी नाटक : चरित्र सृष्टि के आयाम. दिल्ली : तक्षशिला प्रकाशन, संस्करण : 1979, पृष्ठ 432.
4. मुद्गल, चित्रा. आवां. नई दिल्ली : सामाजिक प्रकाशन, संस्करण : 2019, पृष्ठ 258.
5. खेतान, प्रभा. पीली आंधी. प्रयागराज : लोक भारती प्रकाशन, संस्करण : 2018, पृष्ठ 242.
6. मुद्गल, चित्रा. आवां. नई दिल्ली : सामाजिक प्रकाशन, संस्करण : 2019, पृष्ठ 361.
7. खेतान. प्रभा, छिन्नमस्ता, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण : 2013, पृष्ठ 170.
8. शर्मा, नासिरा. सात नदिया एक समंदर. नई दिल्ली : सरस्वती विहार, संस्करण : 1983, पृष्ठ 92.
9. मुद्गल, चित्रा. आवां. नई दिल्ली : सामाजिक प्रकाशन, संस्करण : 2019, पृष्ठ 424.
10. मुद्गल, चित्रा. एक जमीन अपनी. नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, संस्करण : 2016, पृष्ठ 220.
11. मैत्रेयी, पुष्पा. चाक. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण : 1997, पृष्ठ 328.
12. खेतान, प्रभा. पीली आंधी. इलाहाबाद : लोक भारती प्रकाशन, संस्करण : 1996, पृष्ठ 242.
13. मुद्गल, चित्रा. एक जमीन अपनी. नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, संस्करण : 1990, पृष्ठ 137.
14. प्रियंवदा, उषा. अंतर्वंशी. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन. संस्करण : 2000, पृष्ठ 105.
15. वर्मा, शुभा. सुभान तेरी कुदरत. दिल्ली : विवेक प्रकाशन. संस्करण : 1987, पृष्ठ 108-109.

डॉ. लूनेश कुमार वर्मा
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, छछानपैरी
विकास खण्ड-अभनपुर, जिला रायपुर (छत्तीसगढ़), मो. 8109249517 luneshverma@gmail.com